सत्ता में बैठे लोगों का उद्देश्य जनता की सेवा हो : आचार्य महाश्रमण

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का तीसरा दिन

सरदारशहर 28 सितम्बर, 2010

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के तीसरे दिन 'अणुव्रत प्रेरणा' दिवस पर आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में विशेष वक्ता के रूप में बीकानेर के सांसद अर्जुन मेघवाल, बालकृष्ण कौशिक, भरत गौड़ आदि विशेष रूप से उपस्थित होकर अपने विचार व्यक्त किये।

आचार्यश्री महाश्रमण ने इस मौके पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि अणुव्रत पापों से बचने का संदेश देता है आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अणुव्रत के आंदोलन को जन-जन तक लेकर पहुंचे और लोगों को संयम का संदेश दिया। जब आचार्यश्री महाप्रज्ञ के पास अहिंसा यात्रा के दौरान गुजरात में हिन्दु, मुस्लिम एवं प्रशासन बैठते थे और उनको शांति का संदेश दिया जाता था तो ऐसा लगता मानो एक पिता अपने पुत्रों को समझा रहे हैं।

उन्होंने कहा जो लोग सत्ता में आए तो वे सेवा करने के उद्देश्य से आए और जनता की सेवा ही मुख्य उद्देश्य उनके सामने रहे, एक व्यक्ति व्यापार करता है तो उसका मुख्य उद्देश्य वस्तु का वितरण कर सेवा करने का भाव होना चाहिए दूसरा है परिवार के भरण-पोषण के लिए धन अर्जन करना, जहां केवल धन मुख्य बन जाता है और सेवा बाद में तो वहां फिर अणुव्रत भी रोने लग जाता है। इसी तरह एक शिक्षक का मुख्य उद्देश्य नई पीढ़ी में अच्छे संस्कार देना, डॉक्टर का मुख्य उद्देश्य रोगी की सेवा करना, एक वकील का मुख्य उद्देश्य ईमानदारी के साथ न्याय करना यही अणुव्रत संदेश देता है। एक सेवा करने वाला व्यक्ति नाम ख्याति की भावना न रखे सेवा की भावना रहे तो उसके जीवन में अणुव्रत धर्म अवतरित होता है चाहे वह किसी जाति संप्रदाय को मानने वाला व्यक्ति हो।

इस अवसर पर मुनि सुखलाल ने वक्तव्य दिया। सुजानमलजी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आचार्यश्री आप जिस तरह से चातुर्मास पर पुर्नविचार कर रहे हैं उसी तरह यात्रा के नाम पर पुर्नविचार करें, यात्रा का नाम अनुकंपा यात्रा रखें इसके प्रत्युतर में आचार्यश्री महाश्रमण ने फरमाया कि मेवाड़ यात्रा का नाम अहिंसा यात्रा ही है लेकिन उसका मुख्य उद्देश्य अनुकंपा की चेतना का विकास रहेगा।

इस अवसर पर बीकानेर से समागत सांसद अर्जुन मेघवाल ने 'सौंप दिया इस जीवन का भार तुम्हारे हाथों में' गीत प्रस्तुत करते हुए अपने विचार व्यक्त किये। स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल, सरोज दुगड़ ने गीत की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर मुज़्य अतिथियों का स्वागत चातुर्मास व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष बिमलकुमार नाहटा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रावतमल सैनी ने मोमेंटो व साहित्य भेंट कर किया। कार्यक्रम का संचालन सपना लुणिया ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण ने की शांति की अपील

आचार्यश्री महाश्रमण ने सरदारशहरवासियों से शांति का संदेश देते हुए अपने उद्‌बोधन में कहा कि गायों के मर जाने से अशांति का वातावरण बना क्योंकि लोगों में गायों के प्रति अनुकंपा की सद्‌भावना है इसके साथ शहर में शांति रहे, गलती को सुधारा जाए, बाजार में अशांति नहीं रहे। अणुव्रत का काम है कि जहां अशांति है वहां शांति का प्रयास करें।

आज से प्रारंभ होगा जैन रामायण का वाचन

आज से (28 सितज़्बर) रात्रि 8 बजे से 8.30 बजे तक जैन रामायण का वाचन आचार्यश्री महाश्रमण व मुनि दिनेश कुमारजी द्वारा किया जाएगा।

– **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)